AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

आधुनिक भारत में महिला आन्दोलन और उनकी राजनीतिक सक्रियता

ORIGINAL ARTICLE

Author

डॉ. श्रवण कुमार
सहायक प्राध्यापक
राजनीति विज्ञान विभाग
नालन्दा कॉलेज
बिहार शरीफ, बिहार, भारत

शोध सार

आधुनिक भारत में जो सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीति बदलाव दिखाई देते हैं, उन सभी में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है, परंतु इतिहास के पन्नों में उसका उल्लेख बहुत कम ही मिलता है। यही कारण है कि वर्जीनिया वुल्फ ने एक जगह लिखा भी है कि "इतिहास में जो कुछ अनाम है वह औरतों के नाम है।" विश्व के किसी भी व्यवस्था में अगर देखा जाए तो औरतें हर मोर्चे पर नजर आयेगी, भले उसका स्वरूप कैसा भी क्यों न हो। यद्यपि महिला आंदोलनों का उद्देश्य व्यापक समाजहित एवं स्वयं के उत्थानों से जुड़ा हुआ होता है, परंतु उसके परिणाम व्यापक हुए हैं। भारत में आजादी के दौरान से लेकर हाल के किसान आंदोलन, सबरीमाला मंदिर विवाद जैसे अनेक घटनाएँ इतिहास में दर्ज हैं, जब बड़ी तादाद में महिलाएँ सड़कों पर उतर आई और अपने एकजुट संघर्ष से इतिहास की दिशा एवं दशा दोनों को बदल कर रख दी है। औरतों ने अपने संघर्ष गाथा से इतिहास में यह दर्ज कर दिया है कि अगर वो अपने पर आ जाएँ तो कुछ भी नामुमकिन नहीं। पितृसत्तात्पक समाज होने के बावजूद भी महिलाओं ने अपने बलबूते भारतीय राजनीति में अपनी अलग पहचान बनाई है। समानता, स्वतंत्रता, राजनीति में बराबर की हिस्सेदारी के लिए उनके संघर्ष आज भी जारी हैं। भारतीय समाज में पितृसत्तात्मक व्यवस्था को महिलाओं के उत्थान के मार्ग में प्रमुख बाधा के रूप में देखा जाता रहा है। यह न सिर्फ महिलाओं को सार्वजनिक जीवन में आने से हतोत्साहित करता है बल्कि प्रवेशद्वार की बाधाओं की तरह काम करता है लेकिन विगत कुछ वर्षों से देखा जा रहा है कि राजनीतिक दलों के भेदभावपूर्ण रवैये के बावजूद भी मतदाता के रूप में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी नब्बे के अंतिम दशक से उल्लेखनीय रूप से बढ़ी है, लेकिन अभी भी कई चुनौतियां मौजूद हैं। महिलाओं ने विभिन्न आंदोलनों और संगठनों के माध्यम से राजनीतिक भागीदारी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

मुख्य शब्द

महिला आंदोलन, राजनीतिक सक्रियता, सार्वजनिक जीवन, पितृसत्तात्मक व्यवस्था, नव–नारीवाद, राजनीति का महिलाकरण.

प्रस्तावना

भारत का सम्पूर्ण इतिहास देश की आधी आबादी का नेतृत्व करनेवाली महिलाओं के आंदोलन से भरा पड़ा है। इतिहास में औरतों की भूमिका को हमेशा से छिपाया जाता रहा है। यह सच है कि 19वीं सदी के अंत और बीसवीं सदी के शुरूआत में अनेक महिला आंदोलन हुए, पर उन आंदोलन का कोई इतिहास नहीं मिलता है। वास्तव

में राजनीति शुरू से ही स्त्री मुद्दों को समाज का, मानवता का, अधिकारों का मुद्दा मानने से कतराती रही है। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के गठन के बाद बंगाल विभाजन के मुद्दे पर पहली बार सार्वजनिक रूप से स्त्रियाँ बड़ी संख्या में सामने आती है, सभा करती है और वंदे मातरम् के नारे लगाती है। स्वदेशी आंदोलन के लिए वे अपने गहने तक दे दिए। 1925 में सरोजनी नायडू कांग्रेस की पहली महिला अध्यक्ष चुनी गई। अपने भाषण में उन्होंने यह कहा कि सालों से अब तक जो स्त्री पालना झुलाती थी और लोरियाँ गाती थी, उसे यह जिम्मेदारी सौंप कर आपने अपने गिरते हुए पुरूषत्व का कुछ प्रायश्चित किया है और स्त्री को, जिसका कोख से सभ्यता की शुरूआत हुई, उसे जनता के दुनियावी और आध्यात्मिक विकास में अपना साथी और साझीदार स्वीकार किया। सार्वजनिक जीवन में महिलाओं को लाने में महात्मा गाँधी का भी बड़ा योगदान रहा। महात्मा गाँधी के आह्वान पर देश के लिए अपना वक्त, धन और प्राण देने वाली महिलाओं ने ''शक्ति'' के प्रतीक के रूप में असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन, स्वदेशी प्रचार, चरखा चलाना, शराब का विरोध करना, जैसे बहुत से कार्यों में अति उत्साह से भाग लिया। इन आंदोलनों में उनकी भागीदारी ने उनकी स्वातंत्र्य चेतना को देश की आजादी के ख्वाब से जोड़ दिया। इस प्रकार गाँधीजी ने राजनीति का सिर्फ महिलाकरण हीं नहीं किया बल्कि महिलाओं के लिए विशेष स्थान भी बनाया।

यह विचारणीय है कि इन राष्ट्रीय आंदोलनों में जहाँ महिलाओं को शक्तिस्वरूपा दुर्गा के रूप में देखा गया और स्वयं भारत को माता बना दिया गया, फिर भी इन राष्ट्रीय आंदोलनों में महिलाओं की भरपूर भागीदारी ने उनके खुद के लिए स्वतंत्र फैसलों की कोई राह नहीं खोली। उनकी जीवन शैली में कोई परिवर्तन नहीं आया। स्त्री को उसकी प्रतिभागिता केवल देवी माँ और शक्ति के नाम पर खपा दिया गया। यह मान लिया गया कि माँ अपना हिस्सा थोड़े लेती है, वह सिर्फ संतान हित संघर्ष करती है, त्याग करती है। इसलिए तमाम परिवर्तनों के बीच स्त्रियोचित जैसा था, वैसा ही बना रहा, परंतु इन आंदोलनों से भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन एवं राजनीति में परिवर्तन हुए। सन् 1917 में विमेन्स इण्डियन एसोसियशन बना। 1919 में बम्बई में विमेन काउंसिल का गठन किया गया। 1927 में ऑल इण्डिया विमेन कांफ्रेस बना जो एक सफल संगठन सिद्ध हुआ। ब्रिटिश भारत में हुए प्रांतीय चुनावों में भी कई महिलाओं ने अपनी जीत दर्ज कराई जैसा कि 1937 के नागपुर सम्मेलन में राजकुमारी अमृत कौर ने बताया कि लगभग 60 महिलाएँ विधानसभाओं में पहुँची है और उनमें से एक विजयालक्ष्मी पंडित कैबिनेट मिनिस्ट भी हुई। अरूणा आसफ अली, मैडम कामा, सुचेता कृपलानी जैसे स्त्रियाँ आगे आई जिन्होंने न केवल स्त्री हित में काम किया बल्कि राष्ट्रवादी आंदोलन को मजबूत किया। स्त्रियों के आजादी के आंदोलन में भाग लेने से स्त्री. अधिकारों के प्रति भी जागरूकता बढ़ी। ऑल इण्डिया विमेन कॉन्फ्रेस ने स्त्री–मताधिकार, शिक्षा, बाल विवाह के खिलाफ, सहमति से सम्बन्ध की आयु और तलाक कानून के लिए लगातार प्रयास किए। हिन्दू कोड बिल का सदन से पास होना उनके संघर्ष को ही बयां करती है, जिसमें विवाह की आयु सीमा बढ़ाने, स्त्रियों को तलाक का अधिकार देने, मुआवजा तथा उत्तराधिकार के अधिकार देने व दहेज को ''स्त्रीधन'' मानने की सिफारिश की गई थी।

सत्तर के दशक तक स्त्री आंदोलनों में एक चुप्पी छाई रही। स्त्रियाँ स्थानीय विद्रोहों में भाग लेती थी और उसकी समाप्ति के बाद वापस घर की ओर लौट जा रही थी। सत्ता और निर्णय में भागीदारी के लिए कहीं कोई चुनौती स्त्री की ओर से नहीं थी। गोरा देवी के नेतृत्व में चलाये गए 1973 का चिपको आंदोलन यह भारत का पहला ऐसा आंदोलन था, जिसके बाद पर्यावरण का मुद्दा भारतीय राजनीति का केन्द्रीय सवाल बन गया। इसके पहले तो किसी ने सोचा भी नहीं था कि जल, जंगल, जमीन को बचाना भी जरूरी है। देश में 70 के दशक में जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में बड़ा आंदोलन हुआ जिस आंदोलन ने सत्ता की नींव हिला दी। उसमें बड़ी संख्या में स्त्रियों ने हिस्सा लिया। कॉलेज स्कूलों से निकलकर निरंकुश सत्ता के खिलाफ वे सड़कों पर थी।

1970 के दशक में भारत में और भारत के बाहर घटी घटनाओं ने भारतीय महिला आंदोलनों को एक क्रांतिकारी मोड़ दिया। अंतर्राष्ट्रीय महिला वर्ष और महिला दशक ने पाश्चात्य देशों में ''नव नारीवाद'' को नई पहचान दी। 1970 का मध्यकाल भारतीय राजनीति के लिए भी एक विभाजन रेखा था जहां कांग्रेस ने इंदिरा गांधी के नेतृत्व में लोकप्रिय राजनीति के नए दौर का उद्घाटन किया, वहीं मुख्यधारा की राजनीतिक संस्थाओं के लोकतांत्रिक आधार को धीरे–धीरे और बढ़ाने पर बल दिया जाने लगा। यह नए सामाजिक आंदोलन की शुरुआत का दौर था, जिसमें महाराष्ट्र

का शाहदा आंदोलन प्रथम था। 1972 में गांधीवादी समाजवादी इला भट्ट ने स्वरोजगार महिलाओं का संघ स्थापित किया। 1973 में महिलाओं ने बड़े पैमाने पर कीमतों में वृद्धि के विरोध और उपभोक्ता संरक्षण के लिए आंदोलन किया। इस वक्त तक महिला संगठन स्थापित करने की शुरुआत हो चुकी थी जो पूरी तरह से आजादी के पूर्व के आंदोलनों से भिन्न थी। नव महिला आन्दोलनों ने 1975 में आपातकाल के विरुद्ध आवाज उठाई थी। इसके साथ ही स्थानीय आंदोलनों जैसे .चिपको आंदोलन से जहां पर्यावरणीय नारीवाद का जन्म हुआ वहीं बोधगया आंदोलन जिसमें महिलाओं के भूमि अधिकारों की मांग की गई थी का जन्म हुआ।

आजादी के बाद 80 का दशक भारत में स्त्री आंदोलन का दशक माना जाता है जब महिलाएँ एक तरफ स्त्री के मसले पर लड़ रही थी और दूसरी ओर राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्र में बड़े बदलाव जारी थे। राजनीति में अपनी हिस्सेदारी से लेकर वह जल, जंगल और जमीन की लड़ाई में लगी रही। यह महिला राजनीति के लिए स्व–चेतना जगाने वाले वायदों का दौर था। मथुरा बलात्कार केस के दौरान महिला आंदोलन का राष्ट्रव्यापी चरित्र दिखाई देता है। 1980 के मध्य में जहां शाहबानो केस के बाद ''समान नागरिक संहिता'' स्थापित करने की मांग उठ रही थी वहीं इसी दौरान राजनीति और सामाजिक क्षेत्र में एक परिवर्तनकारी भूमिका के लिए महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता पर बल दिया जा रहा था। हालांकि महिला आंदोलन को इसका श्रेय जाता है कि उन्होंने बड़े स्तर पर महिलाओं की राजनीति में भागीदारी बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित कराया।

नब्बे के दशक के मंडल आंदोलन में भी महिलाओं की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। इसे राजनीतिक परिवर्तन के काल के रूप में चिन्हित किया गया। महिलाओं को स्थानीय स्वशासन संस्थाओं में आरक्षण मिला। इसी काल में लोगों को आवाज मिली। इसी दशक का आंध्र प्रदेश का शराब विरोधी आंदोलनए महिलाओं का यह आंदोलन अपनी तरह का एक अनूठा आंदोलन था जिसने अंततः वहां की सरकार को भी झुकने के लिए मजबूर कर दिया। यह आंदोलन इतना असरदार और मारक साबित हुआ कि अंततः 1995 में पूरे आंध्र प्रदेश में शराब प्रतिबंधित हो गई व महिलाओं की जीत हुई।

जैसे–जैसे स्त्री अपने अधिकार के प्रति सजग होते गई उस पर हमले भी तेज होते गए। जुलाई 2004 में मणिपुर में महिलाओं का प्रदर्शन आजाद भारत के इतिहास में यह अपनी तरह का पहला विरोध प्रदर्शन था, जिसने दिल्ली तक की सत्ता को हिलाकर रख दिया। इसका असर इतना गहरा और मारक था कि इसके बाद सरकार पुलिस और सुरक्षा बलों पर लगाम कसने की शुरूआत हुई। टाइम पत्रिका ने इस प्रदर्शन को इतिहास में महिलाओं के द्वारा किए गए सबसे सशक्त और ताकतवर विरोध की फेररिस्ट में दर्ज किया।

वर्ष 2012 में निर्भया के बाद शुरू हुआ व्यापक आंदोलन इस बात के लिए भी मिसाल है कि स्त्री सुरक्षा और स्त्रियों के जीवन से जुड़ा कोई भी मुद्दा इसके पहले इस देश की राजनीति में चिंता का केन्द्रीय सवाल नहीं था न इस देश की संसद में इतनी बार दोहराया गया था। ये शब्द महिलाओं की सुरक्षा आजाद भारत के इतिहास की शायद यह पहली घटना थी जिसके कारण चार महीने के रिकार्ड समय के भीतर इस देश का कानून बदला। अंततः सरकार को बलात्कार के विरूद्ध कड़े कानून बनाना पड़ा। सबरीमाला मंदिर में महिलाओं के प्रवेश के मामले में सर्वोच्च न्यायालय द्वारा दिया गया फैसला भी समानता के लिए उनके संघर्ष की ऐतिहासिक जीत कही जा सकती है। इस फैसले के माध्यम से न्यायालय ने न केवल समानता को धर्म से ऊपर रखा है बल्कि आधुनिक सोच वाले समाज में रूढ़िवादी सोच के आधार पर किये जाने वाले भेदभाव को खारिज कर दिया। महिलाओं ने साबित कर दिया अगर वो एकजुट हो जाएँ और सड़कों पर उतर आए तो बड़ी से बड़ी सत्ता को भी झुकना पड़ता है।

हाल के दिनों में मणिपुर, पश्चिम बंगाल, राजस्थान में घटित घटनाओ ने पूरे भारत को झकझोर कर रख दिया। देखा जाय तो हालिया ट्रेंड बताते हैं कि अब ऐसे मसले महज सामाजिक मुद्दे नहीं रहे, अब ये राजनीति की दिशा को भी तय करने लगे हैं। पिछले डेढ़ दशकों में महिला अस्मिता और सुरक्षा की बातें सामाजिक मुद्दे के दायरे से बाहर निकलीं और अब यह चुनाव के केंद्र में आ चुकी हैं। जेंडर राजनीति को आज सियासत में महत्वपूर्ण कारक के रूप देखा जा सकता है। आज महिलाएं केवल भारतीय राजनीति में चुनावी मुद्दा नहीं रह गई बल्कि उससे भी बढ़कर चुनावी राजनीति और सरकार दोनों का आकार देने में शक्तिशाली प्रभाव बन गई है।

स्थानीय स्तर की सरकारों में दिये गये उनके प्रतिनिधित्व ने भी उनमें नेतृत्व की क्षमता को काफी बढ़ाया है। आज सामान्य वर्ग की महिलाएं भी घर के कार्यों के साथ–साथ स्थानीय स्वशासन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। देखा जाय तो संसद तथा राज्य विधानसभाओं में महिलाओं की राजनीति में भागीदारी बढ़ाने के लिए आरक्षण को एक उपाय के रूप में अपनाने को लेकर महिला आंदोलन के अंदर प्रारंभ से ही एक विभाजनकारी दृष्टिकोण रहा है। जहां महिला आंदोलन के अंदर एक वर्ग का मानना है कि इससे महिलाओं की राजनीति में भागीदारी बढ़ेगी, वहीं दूसरे वर्ग का कहना है महिला आरक्षण महिलाओं को राजनीति की मुख्यधारा से अलग कर देगा। इससे सिर्फ संपन्न घरानों और राजनीति में सक्रिय परिवारों की महिलायें हीं आगे आएगी, जो महिला हितों को आगे बढ़ाने में सहायक नहीं होगी। जो भी हो पर संसद ने इस दिशा में महिला आरक्षण विधेयक 2023 अथवा नारी शक्ति वंदन अधिनियम पारित कर इसे कानून का रूप दे दिया है। यह विधेयक लोकसभा, राज्य विधानसभाओं और दिल्ली विधानसभा में महिलाओं के लिए एक तिहाई सीटें आरक्षित करता है। यह लोकसभा और राज्य विधानसभाओं में अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के लिए आरक्षित सीटों पर भी लागू होगा।

स्पष्ट है कि राजनीति में महिलाओं की भागीदारी का स्तर और स्वरूप काफी हद तक हिंसा, भेदभाव, अशिक्षा और वित्तीय चुनौतियों के रूप में सांस्कृतिक और सामाजिक बाधाओं से प्रभावित होता रहा है जो विभिन्न आंदालनों के माध्यम से निरंतर जारी रहा है। आज राजनीतिक सक्रियता और मतदान महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी के सबसे मजबूत क्षेत्र हैं। हालाँकि, भारतीय महिलाओं ने राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, विभिन्न राज्यों के मुख्यमंत्रियों के रूप में कार्य करते हुए महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ प्राप्त की है फिर भी पुरुषों की तुलना में उनका राजनीतिक प्रतिनिधित्व आज भी कम है। मतदान में वृद्धि के बावजूदए महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी मतदान से परे सीमित है। आज भी महिलाएं सामाजिक और संरचनात्मक बाधाओं का सामना कर रही हैं।

देखा जाए तो भूमंडलीकरण के इस दौर में औरतें जितना सबल दिखती है वास्तव में आज भी उतनी नहीं है। सामाजिक स्थितियाँ राजनीतिक घटनाक्रमों की रफ्तार से नहीं बदलती। वर्गों और विभिन्न सामाजिक श्रेणियों में बंटे समाज में स्त्री की हालत इसलिए भी बुरी है कि वह इन विभेदों के साथ–साथ पितृसत्तात्मक समाज को आज भी झेल रही है। आज भी महिलाएँ अपने घर और बाहर के मोर्चे पर दोहरी लड़ाई लड़ रही है। जैसा कि स्त्री आंदोलन को महत्वपूर्ण आयाम देने वाली सिमोन द बावुआर कहती है– मार्क्स के वर्ग संघर्ष के द्वारा ही स्त्री मुक्ति के महान लक्ष्य को हासिल नहीं किया जा सकता है.... चाहे साम्यवादी हों, माओवादी हों या ट्रस्टवादी, औरत हर जगह हर खेमें में अधीनस्थ की स्थिति में है, सबसे निचले पायदान पर खड़ी है। देखा जाय तो पूंजीवादी पितृसत्ता ऊपर से चाहे जितनी उदार और सरल लगे भीतर से बड़ी जटिल है। प्रभा खेतान कहती है कि ''दोष इसकी संरचना में ही है।'' दुनिया की आधी आबादी स्त्रियों की है, दुनिया में दो तिहाई काम औरतें करती है लेकिन दुनिया का सबसे गरीब कौम औरत ही है।

निष्कर्ष

महिला आंदोलन और राजनीति में उनकी सक्रियता से यह स्पष्ट पता चलता है कि उनकी लड़ाई वर्चस्व विहीन समाज की स्थापना से है। यही वजह है कि आज स्त्रियाँ परिवार में श्रम के विभाजन, पारिवारिक संबंधों में उसकी उपस्थिति और सत्ता में उसकी जगह को लेकर आंदोलित है। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि स्त्रियों का आंदोलन एकालाप में नहीं चलता। सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक आंदोलन में स्त्रियों की भूमिका का भले ही आकलन नहीं हुआ हो सच तो यह है कि सभी आंदोलनों में उसकी भागीदारी रही है। यह भी सच है कि स्त्री जब भी किसी आंदोलन का हिस्सा होती है तो वह एक साथ कई वर्जनाओं को तोड़ती है। आशा है कि आधी आबादी के आंदोलन और उनकी राजनीतिक सक्रियता से आनेवाला इतिहास का नया अध्याय लिखा जाएगा।

संदर्भ सूची

1. चतुर्वेदी, जागृति एवं अन्य (27 फरवरी, 2023) *महिला एवं भारतीय राजनीति,* नेशन प्रेस मीडिया प्राण् लिमिटेडए चेन्नई।

2. जैतली, ममता; एवं शर्मा, प्रकाश (2006) *आधी आबादी का संघर्ष,* राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. मलहोत्रा, प्रिया (2001) *भारतीय महिला आंदोलनः कल, आज और कल,* सम्पूर्णा ट्रस्ट, नई दिल्ली।
4. व्होरा, आशारानी (1986) *क्रांतिकारी महिलाएँ,* प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली।
5. व्होरा, आशा रानी (1988) *महिलाएँ और स्वराज्य,* प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली।
6. hindif.eminisminindia.com, Assessed 27/02/2025.
7. https://www.drishtiias.com/hindi/daily-updates/daily-news-analysis/women-reservation-bill2023, Assessed 27/03/2025.
8. https://www.google.com/amp/s/www.bhaskar.com/amp/news/kerala-sabarimala-temple-supreme-court-verdict-live-updates-sabarimala-mandir-news-update-5963065.html, Assessed 27/03/2025.
9. https://www.orfonline.org, भारतीय लोकतंत्र को मजबूती प्रदान करने में महिलाओं की भूमिका, 12 जून 2019, Assessed 06/03/2025.
10. https://www.drishtiias.com/hindi/daily-updates/daily-news-analysis/political-representation-of-women, महिलाओं का राजनीतिक प्रतिनिधित्व, 19 जुलाई, 2024, Assessed 27/03/2025.
11. https://www.orfonline.org/hindi/expert-speak/-the-link-between-education-and-participation-of-women-in-politics, शिक्षा और राजनीति में महिलाओं की भागीदारी के बीच की कड़ी, 30 जुलाई, 2023, Assessed 07/03/2025.
12. राम, प्रवीण (31 मई, 2014) क्यों महिलाएँ निर्णायक भूमिका में नहीं, https://www.bbc.com, Assessed 23/03/2025.
13. पाण्डेय, मनीषा TV 9 Hindi, Publish Fri, 5 March 2021, Edited, Assessed 23/03/2025.
14. ideas for india.in – भारत में राजनीतिक भागीदारी में लगातार मौजूद लैंगिक अंतर, 23 मई 2019, Assessed 25/03/2025.
15. Soleadal prillaman dristiias.com/hindi भारतीय महिलाओं की राजनीतिक सक्रियता, 07 जनवरी, 2020, Assessed 16/03/2025.
16. https://bpac.in/empowering-women-in-politics/, Assessed 05/03/2025.
17. https:f//orumias.com/blog/political-empowerment-of-women-in-india-an-analysis-explained-pointwise/, Assessed 20/03/2025.
18. https://en.m.wikipedia.org/wiki/Women%27s_political_participation_in_India, Assessed 22/03/2025.
19. https://navbharattimes.indiatimes.com/indiaf/ocus-of-all-political-parties-increased-on-the-issue-of-women/articleshow/102092951.cms, Assessed 18/03/2025.
20. Times of India 8th May, 2005, New Delhi.

——==00==——